एग्री आर्टिकल्स
(कृषि लेखों के लिए ई-पत्रिका)
वर्ष: 06, अंक: 03 (मई-जून, 2026)
www.agriarticles.com पर ऑनलाइन उपलब्ध
© एग्री आर्टिकल्स, आई. एस. एस. एन.: 2582-9882

कटहल उत्पादन एवं विपणन से बदली ग्रामीण महिलाओं की जिंदगी, कृषि आधारित उद्यमिता एवं आत्मनिर्भरता की प्रेरक कहानी

डॉ. द्वारका[1], डॉ. रागनी भार्गव[2], डॉ. कृतिका नायक[3], *निशा चढ़ार[4] एवं शोभाराम ठाकुर[5]

[1]अतिथि शिक्षक, कीट. वि., जवाहरलाल नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[2]सहायक प्राध्यापक, वानिकी विभाग, एकलव्य विश्वविद्यालय, दमोह, मध्य प्रदेश

[3]अतिथि शिक्षक, सस्यविज्ञान, जवा. नेहरू कृषि विश्वविद्यालय, कृषि महाविद्यालय, पन्ना, मध्य प्रदेश

[4]एम.एससी. (बॉटनी), महाराजा छत्रसाल बुंदेलखंड विश्वविद्यालय, शासकीय स्नातकोत्तर उत्कृष्ट महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

[5]वरिष्ठ तकनीकी अधिकारी, एक्रिप परियोजना तिल फसल, कृषि महाविद्यालय, टीकमगढ़, मध्य प्रदेश

*संवादी लेखक का ईमेल पता: chadarnisha63@gmail.com

सीधी जिले के महिला स्व–सहायता समूहों ने कटहल उत्पादन और विपणन के माध्यम से आत्मनिर्भरता और ग्रामीण उद्यमिता की एक प्रेरणादायक मिसाल प्रस्तुत की है। पहले स्थानीय स्तर तक सीमित रहने वाला कटहल अब महिलाओं के सामूहिक प्रयासों से दिल्ली जैसे बड़े बाजारों तक पहुंच रहा है। महिलाओं ने कटहल की खेती, संग्रहण, छंटाई, पैकेजिंग और विपणन को संगठित रूप से अपनाकर इसे आय का महत्वपूर्ण स्रोत बना लिया है। इससे महिलाओं की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई है तथा ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार के नए अवसर उत्पन्न हुए हैं। इस पहल ने महिलाओं में आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक पहचान को बढ़ावा दिया है। सामूहिक कार्य प्रणाली और बाजार से जुड़ाव के माध्यम से महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि स्थानीय संसाधनों का उचित उपयोग कर ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाया जा सकता है। यह मॉडल महिला सशक्तिकरण, कृषि आधारित उद्यमिता और आत्मनिर्भर ग्रामीण विकास का उत्कृष्ट उदाहरण बनकर उभरा है।

परिचय

भारत की ग्रामीण अर्थव्यवस्था में कृषि और बागवानी का अत्यंत महत्वपूर्ण स्थान है। ग्रामीण क्षेत्रों में रहने वाले अधिकांश परिवार प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से कृषि गतिविधियों पर निर्भर रहते हैं। इनमें महिलाओं की भूमिका विशेष रूप से महत्वपूर्ण होती है, क्योंकि वे खेती, पशुपालन, बीज संरक्षण, खाद निर्माण, फल–सब्जी उत्पादन और कृषि प्रसंस्करण जैसे अनेक कार्यों में सक्रिय भागीदारी निभाती हैं। इसके बावजूद लंबे समय तक ग्रामीण महिलाओं को कृषि क्षेत्र में उचित पहचान और आर्थिक स्वतंत्रता प्राप्त नहीं हो सकी। महिलाओं की मेहनत अक्सर घरेलू कार्यों तक सीमित मान ली जाती थी, जबकि वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था की वास्तविक आधारशिला रही हैं। वर्तमान समय में महिला स्व–सहायता समूह ग्रामीण विकास और महिला सशक्तिकरण के महत्वपूर्ण माध्यम बनकर उभरे हैं। इन समूहों ने महिलाओं को संगठित होकर सामूहिक रूप से कार्य करने, बचत करने, स्वरोजगार अपनाने और कृषि आधारित उद्यमों से जुड़ने का अवसर प्रदान किया है। विशेष रूप से कृषि एवं बागवानी आधारित उत्पादों के मूल्य संवर्धन और विपणन के माध्यम से महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने की दिशा में नई संभावनाएं प्राप्त हुई हैं। मध्यप्रदेश के सीधी जिले में महिला स्व–सहायता समूहों द्वारा कटहल उत्पादन और विपणन की पहल इसी दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण बनकर सामने आई है। कटहल, जो पहले केवल स्थानीय स्तर पर उपयोग होने वाला पारंपरिक फल माना जाता था, आज महिलाओं के सामूहिक प्रयासों से बड़े बाजारों तक पहुंच रहा है। पहले गांवों में कटहल का समुचित उपयोग नहीं हो पाता था और कई बार यह बिना उपयोग के खराब हो जाता था। लेकिन महिलाओं ने इसे एक आर्थिक अवसर के रूप में पहचाना

और संगठित प्रयासों के माध्यम से इसकी खेती, संग्रहण, छंटाई, पैकेजिंग और विपणन का कार्य प्रारंभ किया। आज महिला समूहों द्वारा उत्पादित कटहल सीधी जिले से निकलकर दिल्ली जैसे बड़े बाजारों तक पहुंच रहा है। यह उपलब्धि केवल एक कृषि उत्पाद की बाजार तक पहुंच नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण महिलाओं की मेहनत, संगठन क्षमता, उद्यमिता और आत्मनिर्भरता की सफलता का प्रतीक है। इस पहल ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि स्थानीय संसाधनों को सही दिशा, प्रशिक्षण और बाजार से जोड़ा जाए, तो ग्रामीण महिलाएं आर्थिक और सामाजिक परिवर्तन की मजबूत आधारशिला बन सकती हैं।

समस्या की पहचान

ग्रामीण क्षेत्रों में महिलाओं के सामने सबसे बड़ी समस्या स्थायी रोजगार और आय के अवसरों की कमी रही है। अधिकांश महिलाएं कृषि कार्यों में योगदान देने के बावजूद आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर नहीं थीं। उनके पास स्वरोजगार के सीमित अवसर थे तथा कृषि उत्पादों के विपणन और मूल्य संवर्धन की पर्याप्त जानकारी भी उपलब्ध नहीं थी। सीधी जिले के ग्रामीण क्षेत्रों में कटहल की उपलब्धता पर्याप्त मात्रा में थी, लेकिन इसका उपयोग केवल घरेलू स्तर तक सीमित था। कटहल का उचित बाजार न होने के कारण किसानों और महिलाओं को इसका अपेक्षित लाभ नहीं मिल पाता था। कई बार कटहल समय पर नहीं बिक पाने के कारण खराब हो जाता था, जिससे आर्थिक नुकसान होता था। ग्रामीण क्षेत्रों में संग्रहण, परिवहन और विपणन की सुविधाओं का अभाव भी एक बड़ी समस्या थी। महिलाओं के पास बाजार से जुड़ाव, उत्पाद की पैकेजिंग, गुणवत्ता प्रबंधन और बड़े व्यापारिक नेटवर्क तक पहुंचने की पर्याप्त जानकारी नहीं थी। इसके अतिरिक्त महिलाओं को कृषि आधारित उद्यमों के लिए प्रशिक्षण और वित्तीय सहायता की भी आवश्यकता थी। इन सभी समस्याओं के कारण स्थानीय संसाधनों का पूरा लाभ ग्रामीण समुदाय को नहीं मिल पा रहा था। इन्हीं चुनौतियों को ध्यान में रखते हुए महिला स्व–सहायता समूहों ने सामूहिक रूप से कटहल उत्पादन और विपणन को स्वरोजगार एवं आत्मनिर्भरता का माध्यम बनाने का निर्णय लिया।

उद्देश्य

इस पहल का मुख्य उद्देश्य ग्रामीण महिलाओं को आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनाना तथा स्थानीय कृषि एवं बागवानी संसाधनों का बेहतर उपयोग सुनिश्चित करना था। महिलाओं का लक्ष्य कटहल जैसे स्थानीय उत्पाद को बाजार से जोड़कर आय का स्थायी स्रोत विकसित करना था। इसके साथ ही महिला स्व–सहायता समूहों को संगठित कर कृषि आधारित उद्यमिता को बढ़ावा देना, महिलाओं में नेतृत्व क्षमता और आत्मविश्वास विकसित करना तथा ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत बनाना भी इस पहल के प्रमुख उद्देश्य थे। महिलाएं यह भी चाहती थीं कि स्थानीय स्तर पर उपलब्ध कटहल को राष्ट्रीय बाजार तक पहुंचाकर उसकी आर्थिक उपयोगिता बढ़ाई जाए और ग्रामीण उत्पादों को नई पहचान मिले।

कार्यान्वयन प्रक्रिया

महिला स्व–सहायता समूहों ने सबसे पहले कटहल उत्पादन और विपणन से संबंधित संभावनाओं का अध्ययन किया। इसके बाद महिलाओं को कटहल की गुणवत्ता, छंटाई, संग्रहण, पैकेजिंग और विपणन से संबंधित प्रशिक्षण प्रदान किया गया। समूहों ने सामूहिक रूप से कटहल का संग्रहण प्रारंभ किया तथा उसे व्यवस्थित तरीके से बाजार तक पहुंचाने की योजना बनाई। महिलाओं ने स्थानीय स्तर पर कटहल की खरीद और एकत्रीकरण की व्यवस्था विकसित की। इसके बाद उत्पाद को बड़े बाजारों तक पहुंचाने के लिए परिवहन नेटवर्क तैयार किया गया। धीरे–धीरे दिल्ली जैसे बड़े शहरों में कटहल की मांग बढ़ने लगी और वहां से बेहतर मूल्य मिलने लगे। समूहों ने सामूहिक विपणन मॉडल अपनाया, जिससे बिचौलियों पर निर्भरता कम हुई और महिलाओं को उत्पाद का उचित मूल्य प्राप्त होने लगा। इस प्रक्रिया में महिलाओं ने गुणवत्ता नियंत्रण, समय पर आपूर्ति और ग्राहक संपर्क जैसे महत्वपूर्ण पहलुओं पर विशेष ध्यान दिया।

नवाचार एवं विशेषताएं

इस पहल की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि इसमें स्थानीय स्तर पर उपलब्ध पारंपरिक फल कटहल को संगठित विपणन प्रणाली के माध्यम से राष्ट्रीय बाजार से जोड़ा गया। महिलाओं ने केवल उत्पादन तक सीमित न रहकर संग्रहण, पैकेजिंग और विपणन जैसे कार्यों में भी सक्रिय भागीदारी निभाई। महिला स्व–सहायता समूहों के माध्यम से सामूहिक कार्य प्रणाली विकसित की गई, जिससे छोटे स्तर पर कार्य करने वाली महिलाओं को भी बड़े बाजार तक पहुंचने का अवसर मिला। इस मॉडल ने यह सिद्ध किया कि यदि ग्रामीण महिलाएं संगठित होकर कार्य करें, तो वे बड़े स्तर पर कृषि आधारित उद्यमों को सफलतापूर्वक संचालित कर सकती हैं। इस पहल ने स्थानीय संसाधनों के मूल्य संवर्धन, ग्रामीण उद्यमिता और महिला सशक्तिकरण को एक साथ जोड़ने का कार्य किया।

उपलब्धियां एवं प्रभाव

महिला स्व–सहायता समूहों द्वारा उत्पादित कटहल अब सीधी जिले से निकलकर दिल्ली जैसे बड़े बाजारों तक पहुंच रहा है। इससे महिलाओं की आय में उल्लेखनीय वृद्धि हुई है और उन्हें स्थायी रोजगार के अवसर प्राप्त हुए हैं। इस पहल ने ग्रामीण महिलाओं में आत्मविश्वास और नेतृत्व क्षमता का विकास किया है। महिलाएं अब कृषि आधारित उद्यमों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं तथा परिवार और समाज में उनकी भूमिका अधिक मजबूत हुई है। कटहल उत्पादन और विपणन के माध्यम से ग्रामीण अर्थव्यवस्था को भी मजबूती मिली है। स्थानीय स्तर पर रोजगार के अवसर बढ़े हैं तथा कृषि आधारित गतिविधियों के प्रति युवाओं और महिलाओं की रुचि बढ़ी है। इस मॉडल का सबसे बड़ा प्रभाव यह रहा कि महिलाओं ने यह सिद्ध कर दिया कि वे केवल घरेलू कार्यों तक सीमित नहीं हैं, बल्कि सफल उद्यमी और कृषि प्रबंधक भी बन सकती हैं।

सामाजिक एवं आर्थिक प्रभाव

इस पहल ने ग्रामीण समाज में महिला सशक्तिकरण की दिशा में सकारात्मक परिवर्तन लाने का कार्य किया है। महिलाएं आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर बनने लगी हैं और परिवार की आय में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं। इससे उनके जीवन स्तर

और सामाजिक सम्मान में भी वृद्धि हुई है। सामूहिक कार्य प्रणाली के कारण महिलाओं में सहयोग, नेतृत्व और निर्णय लेने की क्षमता विकसित हुई है। इसके अतिरिक्त स्थानीय उत्पादों को बाजार से जोड़ने के कारण ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूती मिली है। इस पहल ने यह भी सिद्ध किया कि कृषि आधारित छोटे उद्यम ग्रामीण क्षेत्रों में रोजगार सृजन और पलायन रोकने का प्रभावी माध्यम बन सकते हैं।

निष्कर्ष

महिला स्व–सहायता समूहों द्वारा कटहल उत्पादन और विपणन की यह सफलता कहानी ग्रामीण महिला सशक्तिकरण, आत्मनिर्भरता और कृषि आधारित उद्यमिता का उत्कृष्ट उदाहरण है। महिलाओं ने सामूहिक प्रयास, प्रशिक्षण और नवाचार के माध्यम से स्थानीय संसाधनों को आर्थिक अवसर में परिवर्तित कर दिया। यह पहल केवल कटहल की बिक्री तक सीमित नहीं है, बल्कि यह ग्रामीण महिलाओं के आत्मविश्वास, नेतृत्व क्षमता और सामाजिक परिवर्तन की कहानी भी है। इस मॉडल ने यह सिद्ध कर दिया कि यदि महिलाओं को उचित अवसर, प्रशिक्षण और बाजार से जुड़ाव प्राप्त हो, तो वे ग्रामीण अर्थव्यवस्था को नई दिशा दे सकती हैं। कटहल आधारित यह मॉडल आत्मनिर्भर भारत, महिला सशक्तिकरण और टिकाऊ ग्रामीण विकास की दिशा में एक प्रेरणादायक उदाहरण है, जिसे देश के अन्य क्षेत्रों में भी अपनाया जा सकता है।